मूर्ख इवान

एक रूसी लोककथा का पुनर्कथन

अलेक्जेंडर कुचेरोव

एक बार की बात है एक अमीर आदमी था जिसके तीन बेटे थे. दोनों बड़े बेटे हट्टे-काटते और बलवान थे. उन्हें केवल हंसना और दोस्तों के साथ मस्ती करना ही पसंद था. लेकिन सबसे छोटा बेटा इवान काफी दुबला-पतला और कमजोर था. उसे अपने भाइयों की शोरगुल वाली संगत पसंद नहीं थी. उसे अकेले लंबी सैर पर जाना पसंद था या फिर उसे पेड़ की छाया के नीचे बैठना पसंद था, ताकि वो कुछ सोच-विचार कर सके. इस वजह से लोग इवान को अजीब समझते थे और उसे इवान-द-फ़ूल यानि मूर्ख इवान कहते थे.

फिर एक दिन अमीर आदमी मर गया. उसने अपनी वसीयत में लिखा था कि उसकी सारी संपत्ति उसके तीनों पुत्रों में समान रूप से बांट दी जाए.

दोनों बड़े भाइयों ने इवान से कहा, "ये रहा तुम्हारा हिस्सा. जैसा कि तुम देख रहे हो, यह काफी ज़्यादा है."

इवान ने कुछ देर सोचा और फिर जवाब दिया, "धन्यवाद, मेरे भाइयों, लेकिन मैं उतने सारे पैसों का क्या करूंगा? इसे अपने पास ही रखें. मैं इस धन की बजाय अपनी तकदीर आज़माने जाऊँगा."

इवान की बात सुनकर बड़े भाई खुद मुस्कुराए. कुछ नहीं लेने के लिए भाईयों ने उसे इवान मूर्ख का नाम दिया. फिर उन्होंने इवान के हिस्से को आपस में बांट लिया. उसके बाद इवान ने एक छड़ी उठाई और वो खुली सड़क पर निकल गया.

जल्द ही उसने दूर से किसी के रोने की आवाज़ सुनी. चौक के बीच में एक आदमी खड़ा एक कुत्ते को पीट रहा था. लोग दहशत से वो नज़ारा देख रहे थे.

इवान उस आदमी के पास गया. "तुम बेचारे उस कुत्ते को क्यों पीट रहे हो?" इवान ने पूछा.

"मैं उसे खाना खिला नहीं सकता?" आदमी ने जवाब दिया. "मैं बहुत गरीब हूं. अपने आखिरी पैसों से, मैंने अपने और अपने परिवार के लिए कुछ मांस खरीदा था, लेकिन जैसे ही मैंने पीठ मोड़ी, वैसे ही कुत्ते ने सब मीट खा लिया."

"ऐसा इसलिए होगा क्योंकि वो भी आपकी तरह ही भूखा होगा," इवान ने कहा. "उसे पीटने के बजाय, तुम उसे मुझे क्यों नहीं रखने देते?"

"खुशी से," आदमी ने कहा. "चलो, कुत्ते से छुटकारा तो मिला."

इवान कुत्ते के साथ अपने रास्ते पर चलता रहा. कुछ देर बाद उसने फिर से रोने की आवाज सुनी. चौक के बीच में एक आदमी खड़ा एक बिल्ली को पीट रहा था. लोग खड़े होकर वो नज़ारा दहशत से देख रहे थे.

इवान उस आदमी के पास गया. "तुम बेचारी बिल्ली को क्यों पीट रहे हो?" उसने पूछा.

"मैं उसे खिला नहीं सकता?" आदमी ने जवाब दिया. मैं बहुत गरीब हूँ. अपने आखिरी पैसों से, मैंने अपने और अपने परिवार के लिए कुछ दूध खरीदा था, पर जैसे ही मेरी पीठ मुड़ी, तो बिल्ली सब दूध पी गई."

"ऐसा इसलिए होगा क्योंकि वो बिल्ली भी आपकी तरह ही प्यासी होगी," इवान ने कहा. "उसे मारने के बजाय, आप उसे मुझे उसे क्यों नहीं दे देते?"

"खुशी से," आदमी ने कहा. "चलो, बिल्ली से छुटकारा तो मिला."

फिर इवान ने एक तरफ कुत्ते और दूसरी तरफ बिल्ली के साथ अपने रास्ते पर चलना जारी रखा.

सूर्यास्त हो रहा था. तीनों को थकान और भूख लग रही थी. वे एक पेड़ के नीचे बैठ गए. इवान अपने साथ कुछ खाना लाया था. उसने अपना खाना अपने दो नए दोस्तों के साथ साझा किया. जब वे खा चुके थे, तो कुत्ते ने अपनी पूंछ लहराई और इवान का हाथ चाटा, और बिल्ली ने इवान के पैरों को रगड़ा. फिर तीनों पेड़ के नीचे लेटकर सो गए.

अगले दिन उन्होंने अपनी यात्रा दुबारा से शुरू की. फिर वे एक बड़े फार्महाउस पर पहुंचे.

"मेरे दोस्त," इवान ने किसान से कहा, "क्या आपको एक सहायक की ज़रुरत है? मैं काम की तलाश में हूं. मेरे पास बहुत कम पैसे बचे हैं, और मुझे और मेरे दो दोस्तों को खाने की ज़रुरत है."

किसान ने उस कमजोर युवक की ओर देखा. "मुझे एक सहायक की ज़रूरत है," उसने कहा. "लेकिन यहाँ का काम कठिन है, और मुझे यकीन नहीं है कि तुम उस काम को कर पाओगे."

"कृपा मुझे एक बार कोशिश करने का मौका ज़रूर दें," इवान ने विनती की.

किसान को संदेह हुआ, लेकिन उसने कहा, "ठीक है. मैं तुम्हें एक मौका ज़रूर दूंगा. देखो, यहाँ से कुछ गज की दूरी पर एक झील है. मैं कल वहाँ नौका विहार करने गया था. मौसम खराब होने की वजह से मेरी नाव पलट गई, और मेरा लकड़ी का बेंत, जिसका सुन्दर नक्काशीदार हत्था था पानी में गिर पड़ा. तुम उसे तुरंत खोजकर लेकर आओ."

कुत्ते और बिल्ली के साथ इवान झील की ओर तेजी से बढ़ा. झील बहुत बड़ी थी. किनारे से बहुत दूर पानी पर बेंत तैर रहा था. इवान ने सोचा, तैरने और वापस आने में उसे कम-से-कम एक घंटा लगेगा, और किसान चाहता था कि वो काम जल्दी फटाफट हो.

इवान ने एक आह भरी और वो अपने कपड़े उतारने लगा. तभी उसे पानी में किसी के कूदने की आवाज सुनाई दी. कुत्ता पानी में कूद गया था. बिजली की तरह तेज़ी से वो किनारे से दूर तैरकर गया और अपने दांतों के बीच बेंत पकड़कर लेकर लौट आया.

इवान ने बेंत को घास में सुखाया और किसान के पास ले गया.

किसान हैरान रह गया. "इतनी जल्दी" उसने आश्चर्य से कहा. "तुमने मेरे अनुमान से एक बेहतर सहायक निकले. देखो, मेरे पास तुम्हारे लिए एक और काम है. मेरे बगीचे में एक ऊंचा सेब का पेड़ है. इस टोकरी को ले जाओ, और इसमें सेब भर कर वापस लाओ. और यह काम जल्दी करो."

अपने कुत्ते और बिल्ली के साथ इवान जल्दी से बगीचे में गया. उसने इतना ऊँचा सेब का पेड़ पहले कभी नहीं देखा था. ऐसा लग रहा था जैसे पेड़ आसमान छू रहा हो. पेड़ के ऊपरी हिस्से में बहुत सारे सुंदर सुनहरे सेब थे. उस ऊंचाई पर चढ़ना और उन्हें तोडना एक लंबा, कठिन काम होगा, उसने सोचा, और किसान चाहता था कि वो उस काम को जल्दी करे.

पर तभी इवान ने पेड़ पर पंजों की खरोंच की आवाज सुनकर सुनी. वो उसकी बिल्ली थी, जो बिजली की तेज़ी से पेड़ पर चढ़ रही थी. शीर्ष पर पहुँचकर, उसने शाखाओं को हिलाया, और सेब सुनहरी बारिश की तरह नीचे गिरने लगे. इवान ने उन्हें टोकरी में भरा और उसे किसान के पास ले गया.

किसान हैरान रह गया. "इतना तेज?" उसने कहा. "तुम एक अद्भुत सहायक हो, इवान. मुझे खुशी है कि तुम मेरे लिए काम कर रहे हो."

इवान ने कई महीनों तक किसान के लिए काम किया. उसे दिए जाने वाले हर काम में उसके दोनों दोस्तों ने उसकी मदद की. और किसान उससे बहुत खुश था.

लेकिन कुछ समय बाद इवान बेचैनी महसूस करने लगा. वो वापस सड़क पर यात्रा करना चाहता था और अन्य स्थानों पर अपनी तकदीर आज़माना चाहता था. इसलिए उसने किसान से नौकरी छोड़ने की अनुमति मांगी.

किसान ने कहा, "इतने अच्छे सहायक को खोने के लिए मुझे खेद है," लेकिन मैं तुम्हें रोक नहीं सकता. "खलिहान के पास आओ और अपने अच्छे काम के लिए वहां से अपना इनाम इकट्ठा करो."

फिर किसान ने इवान को दो बोरे दिखाए - एक बड़ा और एक छोटा था. "छोटा बोरा," किसान ने कहा, "सोने के सिक्कों से भरा है और बड़ा रेत से भरा है. तुम दोनों में से किसी एक को चुन सकते हो."

इवान ने कुछ देर सोचा. "मैं उन पैसों का क्या करूँगा?" इवान ने कहा, "मैं रेत का बड़ा बोरी लेना पसंद करूंगा."

उस शाम किसान ने अपनी पत्नी को कहानी सुनाई. वो हंसी. "कल्पना करें वो कितना मूर्ख है! उसने सोने की बोरी की बजाए रेत की एक बोरी चुनी."

"इसीलिए लोगों ने उसे विशेष नाम दिया है," किसान ने कहा. "लोग उसे मूर्ख इवान बुलाते हैं. वैसे वो एक दयालु और मेहनती आदमी है."

इस बीच इवान सड़क पर वापस चलने लगा. उसके एक तरफ कुत्ता और दूसरी तरफ बिल्ली थी और उसके कंधे पर रेत का भारी थैला लटका हुआ था.

जल्द ही उन तीनों ने रोने की आवाज़ सुनाई दी, "मदद करो, मदद करो!" वे तीनों दौड़कर उस स्थान की ओर भागे, जहां से चीखने की आवाज़ आ रही थी. वहां पर उन्होंने उछलती लपटें देखीं. एक बड़ा घर धू-धू करके जल रहा था, और एक खूबसूरत युवती मदद के लिए चिल्ला रही थी और वो दरवाजे से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही थी.

इवान ने तेजी से सोचा. उसने बोरे को फाड़ दिया और आग की लपटों पर रेत फेंकी. उससे आग की लपटें बुझ गईं. इवान ने खूबसूरत युवती को बचा लिया.

युवती ने आँखों में आँसू के साथ, इवान को उसकी जान बचाने के लिए धन्यवाद दिया.

"क्या तुम्हें पता है कि मैं कौन हूं?" युवती ने पूछा.

"नहीं," इवान ने कहा.

"मैं राजकुमारी हूँ," लड़की ने उत्तर दिया. "मेरे पिता इस देश के राजा हैं."

इवान को राजा के सामने बुलाया गया.

"तुम्हारे साहस और आपकी त्वरित सोच के लिए मैं कृतज्ञ और आभारी हूँ," राजा ने कहा, "मेरी बेटी तुमसे शादी करना चाहती है, और मैंने उसे अपनी सहमति दे दी है."

फिर इवान ने राजकुमारी से शादी की, और वे हमेशा के लिए महल में खुशी-खुशी रहे. और फिर वे जहां भी गए और उन्होंने जो कुछ भी किया, कुत्ता और बिल्ली हमेशा उनके साथ रहे.

फिर पूरे राज्य के लोगों ने कहा, "शायद मूर्ख इवान इतना मूर्ख नहीं है."

अंत